पर गिरा. और उसकी चोट से, रानी का पांव टूट गया. तब राजा, घबराकर, एक बारगी बाहर निकल, उसकी औषध करने लगा; कि इस में रात हुई; और चंद्रमा ने प्रकाश किया. चांद की जोत के पड़तेही, दूसरी रानी के शरीर में फफोले पड़ गये; कि अचानक दूरसे किसी गृहस्थी के घर से मूसल की आवाज़ आई; वोंहीं तीसरी रानी के सिर में ऐसा दर्द हुआ कि गश आ गया.

इतनी बात कह, बैताल बोला ऐ राजा! इन तीनों में अति सुकमार कौन है? राजा ने कहा जिस के सिर में पीर हो मूर्छा आई, सोई बहुत नाजुक है. यह बात सुन, बैताल फिर उसी वृक्ष में जा लटका. और राजा वहां जा, उसे उतार, गठरी बांध, कांधे पर रख ले चला.

ग्यारहवीं कहानी

बैताल बोला कि ऐ राजा! पुन्यपुर(१) नाम एक नगर है. तहां का बल्लभ नाम राजा था. और उसके मंत्री का नाम सत्यप्रकाश. उस मंत्री की स्त्री का नाम लक्ष्मी. उस राजा ने एक रोज़ अपने दीवान से कहा, जो राजा होकर सुंदर स्त्री से ऐश न करे तो राज करना उसका निर्फल है. यह बात कह, दीवान को राज का भार दे, आप सुख से ऐश करने लगा. राज की चिन्ता सब छोड़ दी; और दिन रात आनंद में रहने लगा.

(१) पुण्यपुर.

इत्तिफ़ाक़न, एक रोज़ वह मंत्री अपने घर में उदास बैठा था, कि इस में उसकी भार्या ने पूछा स्वामी! इन दिनों आप को बहुत दुर्बल देखती हूं. वह बोला कि निस दिन मुझे राज की चिन्ता रहती है. इससे शरीर दुर्बल हुआ है. और राजा आठ पहर अपने ऐश आराम में रहता है. वह मंत्री की जोरू बोली कि हे पति! बहुत दिन तुमने राजकाज किया. अब थोड़े दिनों के लिये, राजासे बिदा हो, तीर्थ यात्रा करो.

यह बात उसकी सुन, चुपका हो रहा. फिर जब वहां से उठा, तो वक़ दरबार के, राजा के पास जा, रुख़्सत ले, तीर्थ यात्रा करने निकला. जाते जाते समुद्र तीर सेतबंद रामेश्वर(१) जा पहुंचा. वहां जातेही महादेव का दर्शन कर बाहर निकला था; कि इत्तिफ़ाक़न, नज़र उसकी समुद्र की तरफ़ जा पड़ी; तो क्या देखता है, कि एक ऐसा कंचन का पेड़ उस में से निकला कि जिसके ज़मुर्रुद के पत्ते, पुखराज के फूल, मूंगे के फल, निहायत ख़ुशनुमा नज़र आया. और उस दरख़्त पर, अति सुन्दर नायका, बीन हाथ में लिये, मधुर मधुर कोमल कोमल सुरों से बैठी गाती है. बअ्द एक घड़ी के, वह तरवर समुद्र में लोप हो गया.

यह तमाशा मंत्री वहां देख, उलटा फिर, अपने नगरमें आया; और राजा के पास जा दंडवत कर, हाथ जोड़ बोला महाराज! मैं एक अचरज देख आया हूं. राजा ने

(१) सेतुबन्धरामेश्वर.

कहा बयान कर. दीवान ने कहा महाराज! अगले मनुष कह गये हैं, जो बात किसू की अक़ल में न आवे, और कोई बावर न करे, वैसी बात न कहिये. पर यह मैंने आंखों से प्रतच्च देखा; इस से मैं कहता हूं. महाराज! जहां रघुनाथजी ने समुद्र पर पुल बांधा है, उस जा देखता क्या हूं कि सागर में से एक सोने का तरवर निकला; कि ज़मुर्रुद के पात, पुखराज के फूल, मूंगे के फलों से ऐसा ख़ूब लदा हुआ था, कि जिस का बयान नहीं हो सकता. और उस पर महा सुन्दरि स्त्री, बीन हाथ में लिये, मीठे मीठे सुरों से गाती थी. पर एक घड़ी के बअ्द, वह पेड़ सिंधु में छिप गया.

यह बात राजा सुन, दीवान को राज सौंप, अकेला समुद्र के कनारे को चला. कितने एक दिनों में वहां जा पहुंचा; और महादेव के दर्शन को मंदिर में गया. जौं पूजा कर बाहर आया कि समुद्र से वही दरख़त नायका समेत निकला. राजा, उस को देखते ही, सागर में कूद, उसी तरु पर जा बैठा. वह राजा समेत पाताल को चला गया. वह इस को देख के बोली कि ऐ बीर पुरुष! किस वास्ते तू यहां आया है? राजा ने कहा मैं तेरे रूप के लालच से आया हूं. उस ने कहा जो तू काली चौदस के दिन मुझ से न मिले, तो मैं तेरे साथ बिवाह करूं. राजा ने यह बात मानी. तिस पर भी, उन्ने बचन लेकर राजा के साथ ब्याह किया.

ग़रज़, जब अंधेरी चतुर्दशी आई, तो उन्ने कहा ऐ राजा!

आज तू मेरे निकट मत रह. यह सुनके, राजा खड्ग हाथ में ले, वहां से उठा; और एक कनारे जा, छिपकर देखता रहा. जब आधी रात हुई, उस वक़्त एक देव आया. और उसने आते ही इसे गले से लगाया. यह देखते ही, राजा खांडा लेके धाया; और कहा अरे राक्षस पापी! मेरे साम्हने तू स्त्री को हाथ न लगा. पहले मुझसे संग्राम कर. और मुझे तभी तक भय था, कि जबतक तुझे न देखा था. अब मैं निडर हूं.

इतनी बात कह, खांडा निकाल एक ऐसा हाथ मारा कि रुण्ड से मुण्ड जूदा हो ज़मीन पर तड़पने लगा. यह देख, वह बोली कि ऐ बीर पुरुष! तू ने बड़ा उपकार किया. यह कहकर फिर कहा कि न तमाम पहाड़ों में लअ़ल होते हैं; न सब शहरों में सतवंते आदमी; न हरएक बन में चंदन उपजता है; न हर एक हाथी के मस्तक में मोती होता है. फिर राजा ने पूछा यह राक्षस किसवास्ते कृष्ण चतुर्दशी को तेरे पास आया था.

वह बोली मेरे पिता का नाम बिद्याधर है. तिसकी मैं पुत्री हूं. सुन्दरी मेरा नाम. और यह मुक़र्रर था, कि मुझ बिन मेरा बाप भोजन न करता. एक दिन, भोजन की बिरयां, मैं घर में न थी. तब पिता ने क्रोधकर मुझे सराप दिया, कि तुझे काली चौदस के दिन राक्षस आन के गले से लगाया करेगा. यह सुनके, मैं बोली पिता! सराप तो तुमने दिया; पर अब मेरे ऊपर कृपा कीजिये. उसने कहा एक महाबीर पुरुष आनकर जब उस राक्षस को

मारेगा, तब तू इस सराप से छुटेगी. सो मैं उस सराप से छुटी. और अब मैं अपने पिता को नमस्कार करने जाऊंगी.

राजा बोला जो तू मेरे उपकार को माने, तो एक बारी मेरे राज को चलके देख; पीछे अपने पिता के दर्शन को जाइयो. वह बोली कि अच्छा; जो आपने कहा सो मुझे क़बूल. फिर राजा उसे साथ ले अपनी राजधानी में आया. शादियाने बजने लगे. सारी नगरी में ख़बर हुई कि राजा आया. तब घर घर बधाई मंगलाचार होने लगे. फिर तो तमाम नगर के मंगलामुखी आनके दरबार में मुबारक बादी देने लगे. राजा ने बहुतसा दान पुण्य किया.

फिर कई एक दिन पीछे, वह सुन्दरी बोली महाराज! अब मैं अपने बापके यहां जाऊंगी. राजा ने उदास हो कर कहा कि अच्छा सिधारो. जब इसने राजा को उदास देखा तो कहा महाराज! मैं न जाऊंगी. राजा ने कहा किसवास्ते तूने अपने बाप के यहां का जाना मौक़ूफ़ किया. वह बोली अब मैं मनुष की हो चुकी. और पिता मेरा गंधर्व है. अब मैं जाऊं तो मेरा आदर न करेगा. इस लिये मैं नहीं जाती. यह सुन राजा बहुत ख़ुश हुआ, और लाखों रुपये का दान पुन्य किया. राजा के इस अहवाल के सुनने से, दीवान की छाती फटी; और मर गया.

इतनी बात कह, बैताल बोला ऐ राजा! किस लिये वह मंत्री मर गया? तब राजा बीर बिक्रमाजीत ने कहा, मंत्री ने देखा कि राजा तो ऐश करने लगा. और राज-

काज की चिन्ता सब भुला दी. प्रजा अनाथ हुई. अब मेरा कहा कोई न मानेगा. इसी चिन्ता से वह मर गया. यह सुन, बैताल फिर उसी वृक्ष पर जा लटका. राजा, फिर उसी तरह से, कांधे पर रखकर उसको, रवाना हुआ.

बारहवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा बीर बिक्रमाजीत! चूड़ापुर नाम एक नगर है. वहां का चूड़ामन(१) नाम राजा था. जिसके गुरूका नाम देवस्वामी. और उसके बेटे का नाम हरिस्वामी. वह कामदेवके समान सुंदर, और शास्त्र में बृहस्पति की बराबर. और धन उसके कुबेर का सा. वह एक ब्राह्मण की बेटी, कि नाम उसका लावन्यवती(२) था, व्याह लाया. उन दोनों में बहुतसी प्रीति हुई.

ग़रज़, एक दिन, गरमी के मौसिम में, रात के वक़्त, चौबारे की छत पर, दोनों ग़ाफ़िल पड़े सोते थे. इत्तिफ़ाक़न, स्त्री के मुंह पर से ओढनी सरक गई. और गंधर्व बिमान पर बैठा हवा में उड़ा हुआ कहीं जाता था. अचानक, उसकी नज़र इस पर पड़ी कि वह बिमान को नीचे लाया; और उस सोती को बिमान पर रखकर ले उड़ा.

(१) चूड़ामणि. (२) लावण्यवती.